The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 6 | June 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF(2026): 5.6
Website: www.theacademic.in

युवाओं पर AI का प्रभाव : एक अध्ययन

डॉ. संतोष मिश्रा

सहायक प्रोफ़ेसर, श्री शंकराचार्य प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, भिलाई, छ.ग., mishradrsantosh2@gmaillcom

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.21444685

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 14-05-2026

Accepted: 25-06-2026

Published: 15-07-2026

Keywords:

युवा, AI, भविष्य, विकास, भारत, अपराध।

ABSTRACT

तकनीकी विकास ने मानव जीवन को सदैव सरल करने का कार्य किया है जो है। आग, पहिया से लेकर के पशुपालन और उसके बाद संचार क्रांति ने पूरी दुनिया को एक नक़्शे पर लाने के साथ एक गांव में बदल दिया। फिर सूचना की क्रांति ने तो जैसे पूरे गांव विश्व को एक चौपाल में परिवर्तित कर दिया है। अमेरिका की सूचनाए हमारे पास ऐसे आती है जैसे हमारे बगल के गांव की सूचना हमें मिल रही हैं। प्रिंटिंग प्रेस के विकास से लेकर के रेडियो एवं टेलीविजन के विकास की वजह से हम लगातार बढ़ते जा रहे हैं और आज ए आई के युग में पहुंच चुके हैं, अभी इसके आगे और कहां जाना है हमें नहीं पता। प्रतिवर्ष सूचना की क्रांति में परिवर्तन जारी है। AI आज विश्व का सबसे ज्वलंत विषय बन चुका है ,प्रतिदिन इस विषय पर लिखा और बोला जा रहा है ,लगातार शिक्षण और प्रशिक्षण के कार्यक्रम किए जा रहे है। पूरा विश्व इस नई तकनीक को विश्व के विकास में एक और बड़े क्रांति की नज़र से देख रहा है। परन्तु हमारी समस्या वे युवा है जिनके हाथ में सबसे पहले यह ताक़त सौपी गई है। भारत एक विशाल युवाओं का देश है ,जाहिर सी बात है यह तकनीक की बागडोर भी उन्ही के हाथों में है अब देखना ये है कि वे इसका इस्तेमाल किस प्रकार से करते है।

प्रस्तावना- तकनीकी हमारे विकसित समाज का अभिन्न अंग हैं। आज अनेक ऐसे तकनीक हमारे आस पास विकसित हो चुकी हैं, जिनके वगैर हमारा जीवन अपूर्ण हैं। AI भी ठीक उसी प्रकार हमारे जीवन का अहम हिस्सा बन रहा है हैं।आइर्टिफिशयल

Disclaimer: The opinions, interpretations, conclusions, recommendations, analyses, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not reflect the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) are solely responsible for ensuring the originality, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring that it is free from plagiarism, AI-generated content, copyright infringement, data falsification, and any other form of academic misconduct.

इंटेलिजेंस कंप्यूटर विज्ञान की वह शाखा हैं, जो कम्प्यूटरीकृत इंसानों की तरह व्यवहार करने की धारणा पर आधारित हैं, इसके जनक जॉन मैकार्थी हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का आरंभ 1950 के दशक में ही हो गया था, लेकिन इसकी महत्ता को 1970 के दशक में पहचान मिली। जापान ने सबसे पहले इस ओर पहल की और 1981 में **फिफ्थ जनरेशन** नामक योजना की शुरुआत की थी। इसमें सुपर-कंप्यूटर के विकास के लिये 10-वर्षीय कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की गई थी।इसके बाद अन्य देशों ने भी इस ओर ध्यान दिया। ब्रिटेन ने इसके लिये **'एल्वी'** नाम का एक प्रोजेक्ट बनाया। यूरोपीय संघ के देशों ने भी **'एस्प्रिट'** नाम से एक कार्यक्रम की शुरुआत की थी इसके बाद 1983 में कुछ निजी संस्थाओं ने मिलकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर लागू होने वाली उन्नत

तकनीकों, जैसे-Very Large Scale Integrated सर्किट का विकास करने के लिये एक संघ **'माइक्रो-इलेक्ट्रॉनिक्स एण्ड कंप्यूटर टेक्नोलॉजी'** की स्थापना की ।यह मशीनों की सोचने,समझने सीखने, समस्या हल करने निर्णय लेने जैसी संज्ञानात्मक कार्यों को करने की क्षमता को सूचित करता हैं इसके जरिये कंप्यूटर सिस्टम रोबोटिक सिस्टम तैयार करता हैं जिसे उन्हीं तर्कों के आधार पर संचालित करने का प्रयास किया जाता हैं जिस आधार पर मानव मस्तिष्क कार्य करता हैं। AI पूर्णता प्रतिक्रियात्मक, सीमित स्मृति मस्तिष्क सिद्धांत एवं आत्म चेतन जैसे अवधारणाओं पर कार्य करता हैं।

आज दुनिया तकनीकी माध्यम में तीव्रता से एक बड़ा आकर लें रही हैं, बढ़ते औद्योगीकरण ,शहरीकरण और भूमण्डलीकरण ने जहाँ विकास की गति को तेज किया हैं, वही इसने कई नई तरह की समस्या को भी पनाह दिया है जिनका समाधान करने के लिए हर रोज नई तकनीकी अपनाई जाती हैं। आज भारत की 68 % आबादी युवाओं की है जिनमे 48 % लोगों के पास स्मार्ट फोन है यानि लगभग 65 करोड़ . पिछले डेढ़ दशकों से सरकार की नीतियों के सहयोग में भी स्मार्टफोन में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है, और कोरोना कल के बाद से तो जैसे स्मार्टफोन जीवन का एक अभिन्न अंग ही बन गया. ऑफिस फ्रॉम होम स्कूल फ्रॉम होम की रणनीतियों की वजह से इसमें जबरदस्त इजाफा हुआ है.

इसके साथ यह भी सच्चाई है कि स्मार्टफोन ने बहुत से बेरोजगारों को आज रोजगार भी दिया है, लोग यूट्यूब और तमाम डिजिटल माध्यमों से अपने विचार तथा वीडियो बनाकर अपना जीवन यापन चला रहे हैं . अतः इस प्रकार से इसने एक रोजगार का माध्यम भी पैदा किया है. लेकिन क्या इसने भारतीय समाज या भारतीय युवाओं के मन मस्तिष्क को प्रभावित नहीं किया है? दरअसल स्मार्टफोन और डिजिटल क्रांति ने भारतीय युवाओं को बहुत ज्यादा ही प्रभावित किया है उसका परिणाम यह है कि हमारे स्कूल और कॉलेज की शिक्षा का स्तर लगातार गिरता जा रहा है.शिक्षा का जब से डिजिटलिकरण हुआ है तब से इसका स्तर दिन प्रतिदिन गिरते ही जा रहा है जबकि होना यूं चाहिए था कि इसमें हमें अनवरत विकास करना चाहिए.

यह तब है जब स्मार्टफोन हमारे युवाओं के पास था अब तो AI के इस दौर ने और भी भ्रामक की स्थितियां पैदा कर दी है. 16 से 20 साल का जो युवा है पूर्णत इसके चक्र जाल में फंस चुका है. उसके किताबें पढ़ने की रुचि गिरती जा रही है, शब्द ज्ञान और भाषा का ज्ञान उससे बहुत दूर हो चुका है. वह वास्तविक ज्ञान को अब डिजिटल माध्यम से प्राप्त किया हुआ ज्ञान को ही वास्तविक ज्ञान मानता है. इंटरनेट के शुरुआती दिनों में हमने यह नहीं सोचा था कि आगे चलकर इस पर पूरी की पूरी व्यावसायिक दुनिया खड़ी हो जाएगी, शिक्षा का ढांचा खड़ा हो जाएगा और सरकार भी उसके जरिए ही चलने लगेंगी. 'पहले आप कीबोर्ड पर उंगलियां चला कर टाइप करते थे उसके बाद ऑन स्क्रीन कीबोर्ड आया तो माउस के जरिए या फिर उंगलियों से टच करके आप टाइप करने लगे फिर आया स्वाइप कीबोर्ड जिसने आपको उंगलियों से टाइप करने की मुश्किल से भी आजाद कर दिया अब आप महज उंगलियों

को एक कुंजी से दूसरी कुंजी तक फिराकर टाइप करने लगे हाथ में स्पीच टू टेक्स्ट की तकनीक आ गई जिसेने वह काम भी बोलकर करना संभव बना दिया'.

साथ ही इसके अनेक प्रकार के लाभ भी बताये जाते हैं। यह भी माना जाता हैं की इसके आने से सबसे ज्यादा अगर किसी का नुकसान होगा तो ओ मनुष्य का होगा। क्यूंकि उनका काम मशीनों से लिया जाएगा, जो खुद ही निर्णय लेने में सक्षम होंगी। और यदि उन पर नियंत्रण नहीं किया तो मानव सभ्यता के लिए नुकसानदायक हो सकती हैं। ऐसे में इनके इस्तेमाल से पहले लाभ और हानि दोनों को सामान रूप से संतुलित करना होगा। हमारी समस्या यह है कि यह तकनीकी हमारे देश के उन युवाओं के हाथ में भी पहुंच रही है जिनके शिक्षा का स्तर बहुत अच्छा नहीं है, लोग बेरोजगार हैं सरकार से सताए हुए हैं समाज से सताए हुए हैं. ऐसे में इन युवाओं के हाथ में इतनी बड़ी तकनीक का खुले रूप में होना बहुत ही घातक साबित हो सकता है. इसके कई दुष्परिणाम हम पहले भी भुगत चुके हैं,देख चुके हैं और यह अनवरत जारी भी है.आज भारत में 18 से 29 वर्ष की 94 % युवा स्मार्ट फोन का इस्तेमाल कर रहे है. एक बोलिवियाई आपराधिक नेटवर्क ने कथित तौर पर शिक्षा मंत्री उमर वेलिज़ रामोस के AI-जनरेटेड डीपफेक ऑडियो का इस्तेमाल करके फ़ोन कॉल में उनका नाम लिया, जिससे कम से कम 19 पीड़ितों को एक फ़र्जी नौकरी योजना में धोखा मिला। कथित तौर पर घोटालेबाजों ने सोशल मीडिया के ज़रिए आवेदकों को लुभाया, विश्वसनीयता के लिए क्लोन की गई आवाज़ों का इस्तेमाल किया और QR कोड के ज़रिए भुगतान की मांग की। अधिकारियों ने इस योजना का पर्दाफ़ाश किया, डिवाइस जब्त की और कई संदिग्धों को गिरफ़्तार किया, जिसमें जेल से धोखाधड़ी करने वाला एक व्यक्ति भी शामिल था। कथित तौर पर नुकसान $720,000 USD से ज़्यादा है। वाशिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटी ने इसी को ध्यान में रखकर अपना एक शोध किया था जिसने ऐसी समस्याओं से निपटने के लिए कई सुझाव रखे है जैसे-डेटा उल्लंघन :AI सिस्टम बहुत ज़्यादा मात्रा में डेटा पर निर्भर करते हैं और अगर उन्हें ठीक से सुरक्षित नहीं रखा गया तो यह डेटा साइबर अपराधियों द्वारा लक्षित किया जा सकता है। उल्लंघन के परिणामस्वरूप व्यक्तिगत डेटा, वित्तीय रिकॉर्ड या शोध डेटा सहित संवेदनशील जानकारी तक अनधिकृत पहुँच हो सकती है।एआई मॉडल में कमजोरियों का फायदा उठाकर उनके व्यवहार में हेरफेर करते हैं। इनपुट डेटा में सूक्ष्म संशोधन करके, हमलावर एआई सिस्टम को धोखा दे सकते हैं, जिससे गलत आउटपुट या निर्णय हो सकते हैं। प्रतिकूल हमले विशेष रूप से स्वायत्त वाहनों या चिकित्सा निदान जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में चिंताजनक हो सकते हैं।

विश्व के बड़े स्मार्टफोन उपभोक्ता देशों के आकडे -

रैंक	देश	स्मार्टफोन उपयोगकर्ता	कुल जनसंख्या	स्मार्टफोन का प्रवेश
1	चीन	974.69 मिलियन	1.43 अरब	68.4%
2	भारत	659 मिलियन	1.42 अरब	46.5%
3	संयुक्त राज्य	276.14 मिलियन	338.29 मिलियन	81.6%

	अमेरिका			
4	इंडोनेशिया	187.7 मिलियन	275.5 मिलियन	68.1%
5	ब्राज़िल	143.43 मिलियन	215.31 मिलियन	66.6%
6	रूस	106.44 मिलियन	144.71 मिलियन	73.6%
7	जापान	97.44 मिलियन	123.95 मिलियन	78.6%
8	नाइजीरिया	83.34 मिलियन	218.54 मिलियन	38.1%
9	मेक्सिको	78.37 मिलियन	127.5 मिलियन	61.5%
10	पाकिस्तान	72.99 मिलियन	235.82 मिलियन	31%

(आकडे)

आकड़े साफ़ जाहिर कर रहे है की भारत में स्मार्टफोन के उपयोगकर्ता बहुत ज्यादा है ,जिनमे युवाओं की संख्या सबसे ज्यादा है .लेकिन समस्या ये है कि आज भारत में शिक्षा का स्तर लगातार गिर रहा है और दो वर्ष के बच्चे से लेकर 17 वर्ष से नाबालिग तक स्मार्ट फोन के आदि हो चुके है ऐसे में इनके आत्मचिंतन के विकास को समय मिल पाना बहुत ही मुश्किल हो रहा है। इसमे युवा लड़कियों की अपनी अलग समस्या है वे लड़कों की तुलना में सोशल मीडिया पर ज्यादा समय बिताती है ,वे अपने सुन्दरता और उससे जुड़ी हुई सामग्रियों के ईर्द-गिर्द ही कंटेंट ढूढती रहती है जो की इनके लिए कई समस्याएं भी पैदा कर रही है। लड़कों की तुलना में लड़कियां अधिकतम रिल बनाने में व्यस्त है।

यह अनुमान लगाया गया है कि भविष्य में लाखों नौकरियों के लिए कहीं अधिक उन्नत डिजिटल कौशल की आवश्यकता होगी, जिसमें कोडिंग, सॉफ्टवेयर और ऐप विकास, नेटवर्क प्रबंधन, मशीन लर्निंग, बिग डेटा विश्लेषण, इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT), साइबर सुरक्षा और ब्लॉकचेन जैसी वितरित लेजर प्रौद्योगिकियां शामिल हैं।

इसके लिए हमारी सरकार भी हर तरह का प्रयास कर रही है इस हेतु अनेकों कौशल विकास शिक्षा का प्रावधान किया जा रहा है। कौशल विकास प्रकोष्ठ को युवाओं को AICTE से मान्यता प्राप्त महाविद्यालयों पंजीकृत सुविधा प्रदाताओं के/माध्यम से कौशल प्रदान करके प्रशिक्षित करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है, जिसका उद्देश्य उनके रोजगारस्वरोजगार के अवसरों को बढ़ाना है। प्रकोष्ठ / अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए विभिन्न योजनाएं चला रहा है। तकनीकी संस्थानों के लिए प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना)PMKVY-TI), रोजगार क्षमता संवर्धन प्रशिक्षण कार्यक्रम)EETP), राष्ट्रीय रोजगार क्षमता संवर्धन मिशन)NEEM), AICTE-स्टार्टअप नीति, युवाओं के व्यावसायिक विकास के लिए कौशल मूल्यांकन मैट्रिक्स)SAMVAY), नेतृत्व विकास कार्यक्रम, आदि। परन्तु इन कार्यक्रमों के सञ्चालन की जिम्मेदारी जिन संस्थाओं को सौपी गई है वे युवाओं के मदद की वजाय उन्हें

फर्जी तरीके से सिर्फ प्रमाण पत्र ही वितरित कर रहे है जिससे की इन योजनाओं का सही और सटीक ज्ञान इन तक नहीं पहुँच पा रहा है।

निष्कर्ष-

भारत दुनिया की हर तकनीकी और सुविधा का उपयोग करने में उपभोग करने में आगे रहा है। यही कारण है कि आज दुनिया के हर तकनीक भारत में है और इसे निर्माण करने वालों की नजर भारत के बाजार पर हमेशा रहती है।

मोबाइल और स्मार्टफोन की तकनीकी सहित सोशल मीडिया के जितने भी प्रोग्राम दुनिया भर में प्रचारित प्रसारित हुए हैं उनका सबसे बड़ा बाजार और पहुंच भारत तक है। भारत दुनिया का एकमात्र ऐसा देश है जहां के युवा यहां की आधी आबादी से ज्यादा है इस आंकड़े पर दुनिया भर के सभी व्यावसायिक वर्ग अपनी नजर रखते हैं।

दूसरी तरफ भारत के व्यापारी और राजनीतिज्ञ इन्हीं युवाओं को अपना शिकार बनाने का कार्य करते हैं।

यही कारण है कि भारत में सोशल मीडिया और स्मार्टफोन पहुंचने का कार्य बहुत तीव्रता से हुआ है ,वे जानते हैं कि सत्ता और राजनीति उनके ही हाथों द्वारा परिवर्तित हो सकती है इसलिए वे लगातार इनसे संपर्क में रहते हैं और उनके मानसिकता कों समझने और परिवर्तन करने का प्रयास करते रहते हैं।

तकनीकी कोई भी खराब नहीं होती परंतु उसका सही प्रयोग होना भी जरूरी है। इस तकनीकी ने हमारे जीवन को बहुत ही सरल कर दिया है परंतु हमारे नैतिकता हमारे ज्ञान हमारे सोचने समझने की क्षमता को लगातार क्षिण करने का कार्य भी किया है, इसलिए हमारा लगातार यह प्रयास होना चाहिए कि हम युवाओं की उन्नत शिक्षा, उन्नत व्यवसाय, उन्नत रोजगार और नैतिकता को सुरक्षित रखते हुए इन तकनीक का प्रयोग कैसे कर सकते हैं इस पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है तभी हम भारत को समृद्ध और सुरक्षित रख पाएँगे |

सन्दर्भ:

- https://www.teneo.ai/blog/homage-to-john-mccarthy-the-father-of-artificial-intelligence-ai
- https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/artificial-intelligence
- https://www.indiatv.in/india/national/india-becomes-the-youngest-country-in-the-world-uttar-pradesh-and-bihar-has-more-youth-population-2023-04-20-954397
- दाधीच,बालेन्दु शर्मा (2022)तकनीक तेरे कितने आयाम ,प्रभात प्रकाशन ,नई दिल्ली –पृष्ठ-16
- https://www.itu.int/en/mediacentre/backgrounders/Pages/digital-inclusion-of-youth.aspx
- https://incidentdatabase.ai/cite/937/
- https://explodingtopics.com/blog/smartphone-stats
- https://www.itu.int/en/mediacentre/backgrounders/Pages/digital-inclusion-of-youth.aspx
- https://www.aicte-india.org/bureaus/skill-development